प्रतापधन की उत्पादन क्षमता

आर्थिक गुण

(1)	एक दिन के चूजे का औसत वजन	35–38 ग्राम
(2)	आठ सप्ताह पर औसत वजन	681–850 ग्राम
(3)	20 सप्ताह पर मुर्गे का औसत वजन	2480 ग्राम
(4)	20 सप्ताह पर मुर्गी का औसत वजन	1931 ग्राम
(5)	40 सप्ताह पर मुर्गे का औसत वजन	2620 ग्राम
(6)	40 सप्ताह मुर्गी का औसत वजन	2230 ग्राम
(7)	प्रथम अण्डा उत्पादन पर उम्र	140 दिन
(8)	यौन परिपक्वता की उम्र	160 दिन
(9)	अण्डे का औसत वजन	50 ग्राम
(10)	वार्षिक अण्डा उत्पादन	161

आजीविका सुरक्षा एवं उद्यमिता विकास

प्रतापधन की आपूर्ति एवं पिछले कई वर्षों के मूर्गीपालकों के अनुभव यह दर्शाते हैं कि प्रतापधन मुर्गीपालन से ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका एवं उद्यमिता विकास की अपार संभावना है। इसे घर के पिछवाड़े अथवा गहन पद्धति में सफलता पूर्वक पाला जा सकता है एवं अधिक से अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। मुर्गीपालक प्रतापधन मुर्गी को अपनाकर ग्रामीण क्षेत्र में सफल उद्यमी बन सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में अण्डों व मांस की आपूर्ति में यह एक सफल उद्यम है जिसके लिए तकनीकी एवं सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। प्रतापधन उद्यमी लघु व सीमांत मुर्गीपालकों व केन्द्र के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन सकते हैं जिससे की मुर्गीपालकों को इसका लाभ मिल सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों मे प्रतापधन का आर्थिक विश्लेषण

20 चूजों का आर्थिक विश्लेषण	**50 चूजों का आर्थिक विश्लेषण**	**100 चूजों का आर्थिक विश्लेषण**
आवर्ती लागत **6 सप्ताह के चूजों का खर्च (रू.)** 20 × 85 = 1700 **दाना खर्च (रू.)** 185 कि.ग्रा. × 16 = 2960 **कुल आवर्ती लागत** **4660 रू.** **आय (रू.)** **मुर्गे एवं मुर्गी के बिक्री से आय (रू.)** 9 × 500 = 4500 9 × 300 = 2700 **अण्डों से आय** 9 × 147 × 10 = 13230 **कुल आय – 20430 रु.** **शुद्ध लाभ (रु.)** **20430 – 4660** **= 15770**	**स्थायी लागत (रू.)** 100 वर्गफीट × 50 = 5000 **आवर्ती लागत (रू.)** **6 सप्ताह के चूजों का खर्च (रू.)** 50 × 85 = 4250 **दाना खर्च (रू.)** 475 किलोग्राम × 16 = 7600 **कुल आवर्ती लागत** **11850 रू.** **कुल लागत (रू.)** 5000 + 11850 = 16850 **आय (रू.)** **मुर्गे एवं मुर्गी के बिक्री से आय (रू.)** 23 × 500 = 11500 22 × 300 = 6600 **अण्डों से आय (रू.)** 22 × 150 × 10 = 3300 **कुल आय 51100 रू.** **शुद्ध लाभ (रु.)** **51100 – 16850** **= 34250**	**स्थायी लागत (रू.)** 200 वर्गफीट × 50 = 10000 **आवर्ती लागत (रू.)** **6 सप्ताह के चूजों का खर्च (रू.)** 100 × 85 = 8500 **दाना खर्च (रू.)** 975 किलोग्राम × 16 = 15600 **दवाएं (रू.) – 500** **कुल आवर्ती लागत** **24600 रु.** **कुल लागत (रू.)** **10000 + 24600** = 34600 **आय (रू.)** **मुर्गे एवं मुर्गी के बिक्री से आय (रू.)** 45 × 500 = 22500 45 × 300 = 13500 **अण्डों से आय (रू.)** 45 × 150 × 10 = 67500 **कुल आय –** **103500 रु.** **शुद्ध लाभ (रु.)** **103500 – 34600** **= 68900**

कहाँ से प्राप्त करें?

प्रतापधन के निषेचित अण्डे, टीके लगे हुए एक दिन के चूजे एवं चार से छः सप्ताह के स्वस्थ चूजे अग्रिम भुगतान पर पोल्ट्री फार्म, पशु उत्पादन विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर पर उपलब्ध है।

विस्तृत जानकारी के लिए संम्पर्क करें

डॉ. लोकेश गुप्ता	विभागाध्यक्ष, पशु उत्पादन विभाग	09414156372
डॉ. सिद्धार्थ मिश्रा	परियोजना प्रभारी, ए.आई.सी.आर.पी. पोल्ट्री	09414978472

आलेख

डॉ. सिद्धार्थ मिश्रा
परियोजना प्रभारी

डॉ. लोकेश गुप्ता
विभागाध्यक्ष

श्री लक्ष्मण जाट
तकनीकी सहायक

प्रकाशक

अनुसंधान निदेशक
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रतापधन

ग्रामीण उद्यमिता के बढ़ते कदम

वर्ष – 2020

भा.कृ.अनु.प. – अखिल भारतीय समन्वयक कुक्कुट प्रजनन अनुसंधान परियोजना
अनुसंधान निदेशालय
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

हमारे देश की अर्थव्यवस्था में कृषि के साथ–साथ पशुपालन एवं मुर्गीपालन का बहुत महत्व है। मुर्गीपालन ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्रों में कम खर्च पर तुरन्त आय का अच्छा व्यवसाय है। यह लघु सीमान्त किसान एवं भूमिहीन मजदूरों के लिए ना सिर्फ आजीविका सुरक्षा का साधन है अपितु पोषण सुरक्षा का भी साधन है। भारत अण्डा उत्पादन में विश्व में तीसरे स्थान पर है। देश का अधिकांश अण्डा उत्पादन व्यवसायिक पोल्ट्री से प्राप्त होता है। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्र में मुर्गियों की संख्या लगभग 37% है एवं अण्डा उत्पादन में योगदान सिर्फ 18 प्रतिशत है फिर भी भारत जैसे देश में जहाँ कि लगभग 65 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्र में है, ग्रामीण मुर्गीपालन का अत्यधिक महत्व है। पिछले कई वर्षों में ग्रामीण मुर्गीपालन की तरफ रूझान बढ़ गया है जो कि हाल ही में 20वीं पशु जनगणना से प्रदर्शित होता है जिसके अनुसार इस बार ग्रामीण मुर्गी की संख्या में लगभग 46 प्रतिशत की वृद्धि पाई गई जो कि अभी तक की सर्वाधिक वृद्धि दर है।

राजस्थान मुर्गीपालन के क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ राज्य है यहां कुल कुक्कुट का 60 प्रतिशत योगदान ग्रामीण कुक्कुट का है, विगत कुछ वर्षों में राजस्थान में मुर्गीपालन के प्रति रूचि बढ़ी है। जिसके फलस्वरूप गत वर्ष अण्डा उत्पादन 14.2 प्रतिशत वृद्धि पाई गई जो कि राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक थी एवं साथ ही मुर्गी संख्या में भी लगभग 80 प्रतिशत की बढ़ोतरी पाई गई। राजस्थान में प्रति व्यक्ति अण्डा की उपलब्धता 22 प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष है जो कि राष्ट्रीय औसत एवं आवश्यकता से अत्यधिक कम है। राजस्थान में ग्रामीण कुक्कुट के योगदान को मद्देनजर रखते हुए अखिल भारतीय समन्वयक कुक्कुट प्रजनन अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा मुर्गीपालकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रतापधन, एक द्विप्रयोजनी बहुरंगी संकर नस्ल विकसित की। जो कि ग्रामीण कुक्कुट पालन की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित की गई है। पिछले कई वर्षों से प्रतापधन नस्ल के चूजों की मुर्गीपालकों को आपूर्ति राजस्थान कृषि महाविद्यालय पोल्ट्री फार्म से ही जाती है। प्रतापधन नस्ल में देशी नसल जैसे शारीरिक गुण एवं अधिक उत्पादन क्षमता के कारण यह नस्ल मुर्गीपालकों की पहली पसंद बन गई है जिसके कारण प्रतापधन चूजों की काफी मांग है। ग्रामीण क्षेत्र में मुर्गीपालन बढ़ने से न केवल अण्डा उत्पादन में वृद्धि होगी बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे एवं कुपोषण की समस्या से भी छुटकारा मिलेगा।

प्रतापधन की विशेषताएँ

- ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से पाली जा सकती है।
- इस नस्ल की मुर्गी का रंग बहुरंगीन होने के कारण गाँवों के लोगों द्वारा अधिक पसन्द करने के साथ–साथ इसकी रंग विभिन्नता उसे अपने शत्रुओं से बचाव करने में भी सहायक है।
- इसकी लम्बी टांग होने से ग्रामीण क्षेत्र में अपने को शत्रुओं से बचाती है।
- अण्डे का रंग देशी अण्डे जैसे हल्के भूरे रंग का होता है।
- अण्डे सहने की क्षमता है।
- जल्दी वृद्धि दर 20 सप्ताह (5 माह) पर वजन 1478 से 3020 ग्राम मुर्गे का व 1283 से 2736 ग्राम मुर्गी का वजन हो जाता है।
- अधिक अण्डा उत्पादन लगभग (161 अण्डे/वर्ष) जबकि राजस्थान में देशी मुर्गी के 43 अण्डे होते हैं।
- देशी मुर्गी की तुलना में चार गुना अधिक अण्डा उत्पादन।
- देशी मुर्गी की तुलना में 75 प्रतिशत अधिक वजन।

प्रतापधन का पालन

प्रतापधन के चूजों रखरखाव एवं प्रबंधन

प्रारम्भिक अवस्था यानि एक दिन से लेकर 45 दिन तक के चूजों को कृत्रिम उष्मा की आवश्यकता होती है इसके लिए किसान लकड़ी/धातु/ टोकरी के बने ब्रुडर के नीचे एक बल्ब लगाकर 50–60 बच्चों को रख सकते हैं। गर्मी प्रधान करने में बिछावन भी सहायक होती है जो ब्रुडर के अन्दर 1–2'' मोटी चादर के रूप में बिछाई जाती है। बिछावन के लिए किसान गेहूँ या चावल का भूसा, लकड़ी का बुरादा आदि प्रयोग कर सकते है। चूजे लाने से पहले सभी प्रकार के बर्तनों को जीवाणुनाशक दवा से साफ करके व्यवस्थिति रख दें। यह सारी व्यवस्था 1 से 45 दिन के चूजों के लिए होती है।

आहार व्यवस्था : चार से छः सप्ताह तक के चूजों के लिए ग्रामीण स्तर पर प्रायः संतुलित आहार नहीं मिल पाता है। अतः किसान भाईयों को 4–6 सप्ताह के चूजे ही लेने चाहिए। संतुलित आहार में खनिज तत्वों, विटामिन, जीवाणुनाशक व कॉक्सीडियल दवाओं का समावेश होना चाहिए।

स्वास्थ्यः प्रतापधन का मुख्य बीमारियां से बचाव के लिए निम्नलिखित सारणी के अनुसार टीकाकरण करना चाहिए :–

आयु (दिन)	टीके का नाम	स्ट्रेन	दवा की मात्रा	विधि/तरीका
1	मरेक्स रोग	एचवीटी	0.20 मिली.	सबकट इंजेक्शन (S/C)
1	रानीखेत	लासोटा	एक बूंद	नाक या आंख में
14	आई.बी.डी.	गम्बोरो	एक बूंद	नाक या आंख में
28	रानीखेत	लासोटा	–	पीने के पानी में
42	फाउल पोक्स	–	0.2 मिली.	मांसपेशियों में (I/M)

ग्रामीण क्षेत्रों में पढोरो व अण्डे देने वाली मुर्गी का प्रबन्धन

प्रतापधन के चूजे चार से छः सप्ताह के पश्चात किसान अपने घर के आगे व पीछे आराम से रख सकता है। इस पद्धति को फ्री रेन्ज कहते हैं। इसमें दिनभर के लिए घर के बाहर छोड़ दिया जाता है और रात को सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है।

आहार : वैसे तो मुर्गियाँ ग्रामीण परिवेश में अपने आप इधर–उधर जाकर किचन के अपशिष्ठ भाग को तथा छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े खाकर अपना पालन–पोषण कर लेती है। फिर भी कुछ मात्रा में दाना देना उपयोगी रहता है। मुर्गियों को आहार में मक्का, गेहूं, ज्वार, जौ, कटे हुए चावल आदि खिला सकते हैं। मुर्गियों का ज्यादा वजन होने से अण्डा उत्पादन कम होता है इसके लिए मुर्गी का वजन 2.2 से 2.5 किलोग्राम 6 से 6.5 माह तक होना चाहिए। अण्डे देने वाली मुर्गियों को हमेशा कैल्शियम की आवश्यकता पड़ती है जो की अण्डे के कवच निर्माण में सहायक होता है। इसके लिए 3–4 ग्राम/मुर्गी/दिन/के हिसाब से संगमरमर (मार्बल) पत्थर के टुकड़े देने से कवच कठोर बनता है।

आवास : उचित आवास व्यवस्था नहीं होने से मुर्गियों के उत्पादन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा उनमें मृत्युदर भी बढ़ जाती है। मुर्गियों का दड़बा बनाते समय यह ध्यान में रखे कि एक मुर्गी को 1.5 से 2.0 वर्ग फीट जगह की आवश्यकता होती है। दड़बा जमीन से थोड़ा ऊपर ढलान पर छायादार स्थान पर हो तथा उसमें अच्छा वायु संचार व्यवस्था हो। दड़बे की लम्बाई पूर्व–पश्चिम में होनी चाहिए ताकि मुर्गियों को सीधी धूप व प्रकाश से बचाया जा सके। आवास में बिछावन के लिए चावल की भूसी, गेहूं का भूसा काम में लिया जाना चाहिए ताकि मुर्गियों को गर्मी व फर्श सुखा बना रहे।

स्वास्थ्य प्रबंधन : मुर्गियों की स्वच्छता व स्वस्थ स्वास्थ्य इस व्यवसाय की सफलता है। जिसके कारण इनकी वृद्धि व उत्पादन क्षमता में अच्छी वृद्धि होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में फैलने वाली मुर्गियों की मुख्य बीमारी रानीखेत है। इसके लिए छः माह के अन्तराल में रानीखेत का टीका लगाना चाहिए। साथ में 2–3 माह के अन्तराल में आन्तरिक परजीवियों की दवा देना उचित रहता है। ग्रामीण परिवेश में इनकी मृत्युदर अधिक होने के मुख्य कारण इनके शत्रु जैसे – कुत्ता, बिल्ली, नेवला व साँप हैं अगर इन शत्रुओं से इनकी रक्षा करें तो ग्रामीण परिवेश में मुर्गीपालन एक सफल व्यवसाय है। उपयुक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए किसान 20 से 30 प्रतापधन मुर्गियां रखकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकता है।

टीका लगाना चाहिए। साथ में 2–3 माह के अन्तराल में आन्तरिक परजीवियों की दवा देना उचित रहता है। ग्रामीण परिवेश में इनकी मृत्युदर अधिक होने के मुख्य कारण इनके शत्रु जैसे – कुत्ता, बिल्ली, नेवला व साँप हैं अगर इन शत्रुओं से इनकी रक्षा करें तो ग्रामीण परिवेश में मुर्गीपालन एक सफल व्यवसाय है। उपयुक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए किसान 20 से 30 प्रतापधन मुर्गियां रखकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकता है।